दिल्ली चुनाव : केजरीवाल के विकास पर नहीं लग पाया अमितशाह का शाहीन बाग पलीता

ग्राउंड जीरो से विवेक कुमार की चौथी किश्त

जैसे-जैसे दिल्ली का चुनाव करीब आ रहा है वैसे-वैसे राजनीतिक पार्टियाँ अपने दाँव बदलने लगी हैं। कांग्रेस की शीला दीक्षित तीन बार नई दिल्ली सीट से जीतीं, तीनों ही बार मुख्यमंत्री बनीं। केजरीवाल दो बार जीते और मुख्यमंत्री बने, इस बार जीते तो दीक्षित के रिकॉर्ड की बराबरी करेंगे। दिल्ली के पिछले लगातार पांच चुनाव कांग्रेस और आप ने जीते।

नयी दिल्ली विधानसभा में स्थित कोटला मुबारकपुर गाँव मुख्यबाजार के साथ-साथ बड़ी और मिलीजुली आबादी वाला इलाका भी है। संकरे रास्ते से गुजरते हुए हम सदानंद यादव की मिठाई की दुकान पर रुकते हैं। केजरीवाल सरकार के कामकाज पर उनका रुख अपनी मिठाइयों की तरह मीठा नहीं था। यादव कहते हैं, "फ्री के नाम पर बहुत गंदा पानी दिया जा रहा है जिसे फिल्टर किए बिना नहीं पी सकता। सुबह-सुबह उठो तो पानी मिलेगा, वरना नहीं। पूरी दिल्ली में सीसीटीवी लगाने का वादा था पर मैं जिस गली में रहता हूँ वहाँ एक भी सीसीटीवी नहीं है।" चंद मीटर की दूरी पर बिन्नी की दुकान है, "सर्विस रोड पर दुकानदारों के कब्जे हैं। हम पैदल नहीं चल सकते तो ग्राहक कैसे आएंगे? जीएसटी और नोटबंदी जैसी वाहियात स्कीमों से धंधा पहले ही चौपट है। फिर भी मोदी से तो बेहतर है कि केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनायें।

50 वर्षीय अंजना कुशवाहा गौतम नगर में रहती हैं, उनकी प्रतिक्रिया संतुलित है। उन्होंने बताया कि "बिजली-पानी और सफाई के हालात सुधरे हैं। कुल मिलाकर ठीक काम हुआ, सबसे बढ़िया तो बस की मुफ्त यात्रा है, कम से कम कोई तो यह सोच रहा है कि औरतों को कितनी मशक्कत करनी पड़ती है पैसे कमाने के लिए।

वहीं, चाय की दुकान से अपने बच्चों को पालने वाले 45 वर्षीय कुलदीप के अनुसार केजरीवाल ने लोगों को मूर्ख बनाने के अलावा कोई काम नहीं किया । आप ही देख लीजिए, सीवर लाइन सड़ चुकी है, सीसीटीवी लगे नहीं। मुफ्त बिजली तो अपने यारों को दे रहा है बस, पर हम हर महीने 10 हजार रुपए बिजली बिल देते हैं।" हलाकि कुलदीप की बात का आस-पास खड़े लोगों ने उग्र विरोध करना शुरू कर दिया। 10 हजार बिजली का बिल चाय की टपरी पर कैसे आ रहा है, इसका जवाब कुलदीप ने नहीं दिया।

गौतम नगर से कुछ दूरी पर ही युसूफ सराय का मशहूर बाजार है जो ग्रेटर कैलाश तक के इलाके वालों को आकर्षित करता है। 65 वर्षीय चेला राम की परचून की दूकान है। चेला राम बोले "पानी, बिजली और मोहल्ला क्लीनिक की सुविधाएं अच्छी हैं। पर सबसे बड़ी समस्या कागज-वागज लेने में आ रही है। कैसे कागज, जाति के प्रमाण का, मृत्यु प्रमाण का इत्यादि, सरकारी आदमी पूरे खानदान के कागज मांगने लगते हैं। हाँ गन्दगी बहुत है और साफ-सफाई नहीं हो रही, सांस लेना मुश्किल हो जाता है कभी कभी तो। यहीं चेलाराम की पत्नी फूलवती देवी से बात हुई, "घर के सामने ही डिस्पेंसरी है और डाक्टर देख भी लिया करे बिना पैसे लिए। सबसे बड़ी दिक्कत है कि सारी बीमारियों की एक ही दवा दे देता है और सरकार कुछ इस पर कर नहीं रही।

ग्रीनपार्क की मार्किट में पनवाड़ी की दुकान लगाने वाले कुशलदीप केजरीवाल सरकार से खफा हैं। कहते हैं- फ्री के नाम पर लोगों को सिर्फ बेवकूफ बनाया जा रहा है, जिन इलाकों में हम जैसे गरीब रहते हैं उन कॉलोनियों में सड़कें तक नहीं हैं। दिल्ली सरकार ने कुछ काम नहीं किया, 6 महीने पहले तमाम घोषणाएं कर दीं। और ये भी सिर्फ चुनावी वादे हैं, आगे कुछ नहीं होगा।

सरकार से खुश मेधा ग्रेटर कैलाश के पाश इलाके में रहती हैं, "स्कूल अच्छे हो गए हैं, बसों में मार्शल हैं तो अब सफर में डर नहीं लगता। किराए के पैसे भी बच जाते हैं।" ग्रेटर कैलाश जैसे अमीर इलाके में रहने वाली मेधा बस में चलती हैं? इस सवाल पर मेधा ने बताया कि उनके पिता एक आईएएस अधिकारी हैं और मेधा खुद दिल्ली विश्विद्यालय में प्रोफेसर हैं। इसके बावजूद वह बस में सफर अपने पैसे बचाने के लिए करती हैं। मेधा का मानना है कि जिस अव्यवस्था, प्रदुषण और जैविक संसाधनों की कमी से हम जूझ रहे हैं उसमे कम से कम सार्वजनिक परिवहन अच्छा हो तो सब लोग उसी का इस्तेमाल करेंगे। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल उन्होंने पढाई के दौरान लंदन में सीखा। बसों में मार्शल तैनात करना अच्छी पहल है लेकिन यह कॉलोनियों में भी होने चाहिए।"

मुनीरका के पास बसी झुग्गी-बस्ती में रहने वाले अमित एम्स में सफाई का काम करते हैं, बातचीत में अमित बताते हैं, "दिल्ली में मुझे 12 साल हो गए। यहां कभी सीसीटीवी कैमरे नहीं थे, लेकिन अब लग गए हैं। जिस स्कूल में उनका बच्चा पढता है उस स्कूल की बिल्डिंग नई बन गई, 2 किलोमीटर दूर पर ही मोहल्ला क्लीनिक है जहाँ मुफ्त इलाज मिलता है। और हमें क्या चाहिए? केजरीवाल सरकार फिर आनी चाहिए।"

इसी इलाके में रमेश रहते हैं, रमेश मूलतः यूपी के गोंडा जिले से हैं। हमारा परिचय जानने के बाद साफगोई से बात रखते हैं। उन्होंने कहा, "मेरा बेटा 13 साल का है जो पहले स्कूल नहीं जाता था। अब नया स्कूल बना है तो उसी लालच में जाने लगा दोस्तों को देख कर, टीचर भी वक्त पर आते हैं। लिहाजा, अब स्कूल जाने में कोताही नहीं करता। नल कनेक्शन भी मिल गया है। उन्हीं झुग्गियों की मीना का कहना था, "प्राइवेट अस्पताल के पर्चे पर भी मोहल्ला क्लीनिक से दवाईयां फ्री मिल जाती हैं। मुफ्त सुविधाएं शुरुआती चार साल तो नहीं मिलीं, लेकिन 6 महीने से जरूर मिल रही हैं।"

भद्र वर्ग का रवैया जानना जरूरी था। हम ग्रेटर कैलाश पहुंचे। यहां मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग के लोग ज्यादा हैं। संजीव भदौरिया रिटायर्ड सरकारी अफसर हैं। केजरीवाल सरकार के कामकाज पर वे कहते हैं, "मैं फ्री स्कीम्स के सख्त खिलाफ हूं, यह लोगों को सशक्त नहीं बल्कि निशक्त और निकम्मा बना रही है। सरकार की जेब से कुछ नहीं जाता। ये तो टैक्सपेयर्स का पैसा उड़ा रही है। मेरा पानी का बिल हजारों रुपए कैसे आता है? मोहल्ला क्लीनिक के नाम पर अतिक्रमण हो रहा है। सड़कें और फ्लायओवर अधूरे पड़े हैं। सरकार को उससे कोई लेना-देना नहीं।"

यहीं हमारी मुलाकात आरबी सिंह से होती है, वे पेशे से ट्रेडर हैं, "दिल्ली सरकार की योजनाएं सिर्फ एक खास तबके के लिए हैं और इनसे वो कभी मजबूत नहीं हो सकेगा। बेहतर होता अगर सरकार मुफ्त योजनाओं की बजाए उन्हें रोजगार और बेहतर शिक्षा मुहैया कराती।"

इसी कॉलोनी का गार्डन। यहां कुछ महिलाएं जो ग्रेटर कैलाश के बंगलों में काम करती हैं, गुनगुनी धूप के बीच चर्चा में मशगूल हैं। इनमें से एक सरोज कहती हैं, "हमें मुफ्त कुछ नहीं चाहिए, सरकार पैसा लेकर बेहतर सुविधाएं दे। अब तक क्या बेहतर सुविधा मिली, सरोज ने कहा हाँ, मोहल्ला क्लिनिक और स्कूल अच्छे होने से बच्चो के लिए कुछ आस बनी है कि उन्हें हमारी तरह घरों के चौके नहीं साफ करने पड़ेंगे।"

हर महीने 200 यूनिट तक बिजली फ्री। 201 से 400 यूनिट तक 50 फीसदी सब्सिडी। हर विधानसभा क्षेत्र से 1100-1100 वरिष्ठ नागरिकों को निशुल्क तीर्थयात्रा। पानी फ्री, मोहल्ला क्लीनिक के जरिए फ्री कंसल्टेशन और दवाइयां। एमआरआई जैसे टेस्ट भी फ्री। डीटीसी बसों में महिलाओं के लिए यात्रा अब मुफ्त। एक सांस में सरकार की सभी प्रभावशाली योजनायें गिनवाने के बाद बबलू ने कहा और क्या लोगे पांच साल में? इतने के बाद भी अगर केजरीवाल हार गया तो समझो इस देश में अच्छा आदमी नेता बन ही नहीं सकता।

कुछ नाराजगी और शिकायतों के बावजूद निम्न वर्ग में और कहीं-कहीं मध्यम वर्ग में भी प्रभावशाली तरीके से केजरीवाल के प्रति रुझान दिख रहा है। जहाँ एक तरफ केजरीवाल और उनके पार्टी के सभी प्रचारकों का रुझान जनता के उन मुद्दों पर बात करते रहने का है जिनपर काम करके आम आदमी पार्टी ने अपनी नींव को कुछ हद तक मजबूत किया हैं वहीँ भाजपा का स्टैंड हिंदुत्व बन कर रह गया है जिसको लेकर भाजपा ने खुद का पारम्परिक वोट-बैंक मजबूत किया है।

हुमायुंपुर गाँव सफदर जंग एनक्लेव में रहने वाली भाजपा की प्रचारक रूबी फौगाट ने बताया कि हिंदुत्व आज खतरे में है। शाहीन बाग में बैठे सभी देशद्रोहियों को भाजपा की सरकार बनते ही उठा फेंका जाएगा। क्या धरना देना उनका मौलिक अधिकार नहीं है? रूबी ने कहा बिलकुल नहीं, देश को बांटने के नाम पर कोई धरना नहीं दिया जा सकता। आशीष जो रूबी के पति हैं अपने कुछ दोस्तों के साथ इलाके में घूम कर भाजपा का प्रचार कर रहे हैं। सबने माना वक्त आ गया है कि देश को हिन्दू राष्ट्र बनाया जाए। इन मुसलमानों से एकतरफा भाईचारा दिखा कर हमे आज क्या हासिल हुआ है, शाहीन बाग में धरना देकर इस देश को तोड़ने की साजिश पाकिस्तान से पैसे लेकर यह लोग कर रहे हैं। केजरीवाल भी इस साजिश में मिला हुआ है, जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए आशीष ने कहा कि स्कूल और अस्पताल का इस्तेमाल तो तब होगा न जब हिन्दू बचेगा।

लब्बोलुबाव अब तक का यह है कि शिकवे शिकायतें कम नहीं है, पर फिर भी एक बड़े वर्ग में केजरीवाल सरकार ने अपने काम और नीतियों से पैठ बना ली है। इस चुनाव में इस पैठ और भरोसे का फायदा यकीनन केजरीवाल को मिलता दिख रहा है। वहीँ आम आदमी पार्टी के लिए चिंता का विषय यह भी हो सकता है कि सत्ता के ऊँचे गलियारों में बैठे अमित शाह हिंदुत्व का मास्टर स्ट्रोक शाहीन बाग के नाम पर कब लगा दें जिसकी कोशिश युद्ध-स्तर पर जारी है। बचे हुए दिन केजरीवाल को कदम फूँक-फूँक कर रखने पड़ेंगे।

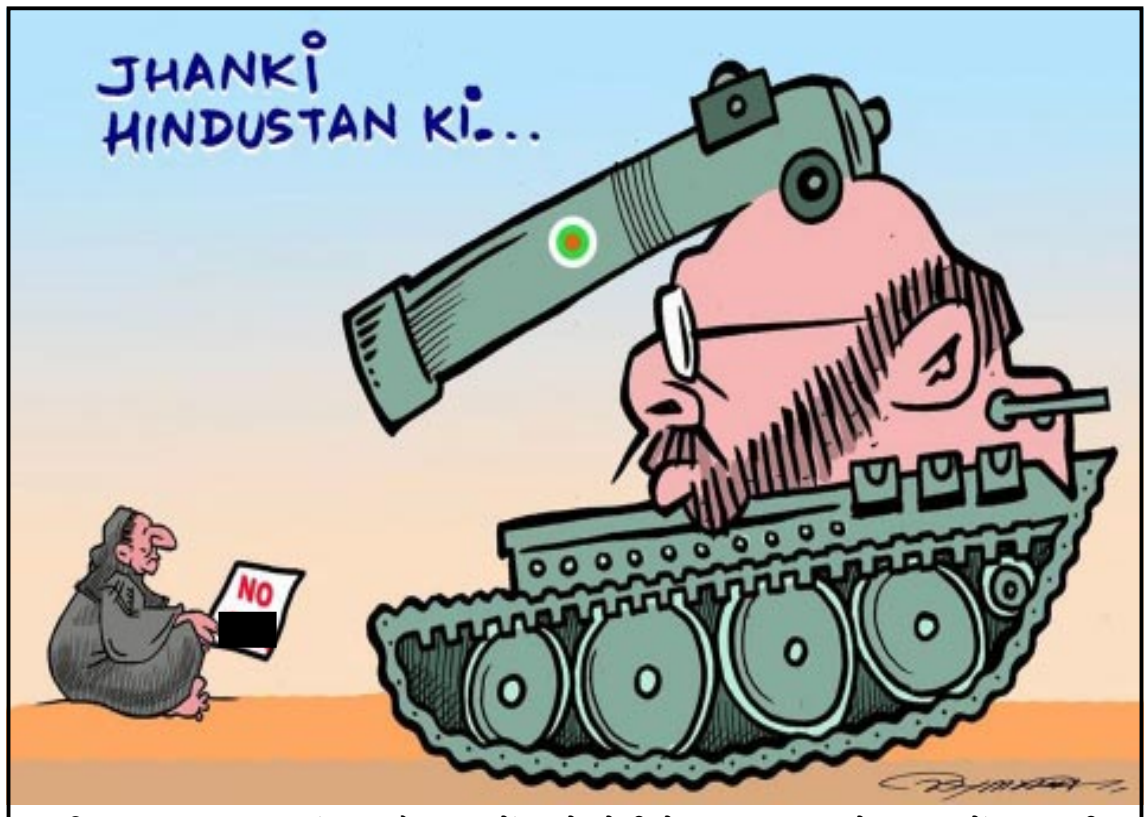

विकास का नारा बुलंद करके सत्ता में आये मोदी ने आम जनता को 2014 में यह यकीन दिलाया था कि पुरानी भाजपा पार्टी से अलग अब नयी भाजपा अपने मुद्दे भी विकास वाले कर लेगी और नेता भी बदल लेगी। नेता तो बदल गया और कई लाइनों में खड़े भी हैं इस नेता को बदलने के लिए पर कमाल की बात है कि विकास खुद इतिहास के कब्र से पुराने राम-रथी आडवानी और पुरानी राम-मंदिर भाजपा का ही झंडा बुलंद किये चुनाव प्रचार में घूम रहा है।

मोदी राज में फ़ास्टैग द्वारा टोल टैक्स की अनोखी लूट

फ़रीदाबाद (म.मो.) वैसे तो सड़कों पर टोल-टैक्स अपने आप में ही एक खुली लूट है, लेकिन फ़ास्टैग आवश्यक कर के उस लूट को ओर बढा दिया गया है। फ़ास्टैग व्यवस्था में कम से कम 150 रुपये टोल-टैक्स खाते में हर वक्त रखना जरूरी है। इससे सैंकड़ों करोड़ रुपये उनके खाते में स्थाई रूप से जमा रहेंगे।

लेकिन असली लूट तो यह शुरू हो गयी है कि फ़ास्टैग लगी कार तो घर पर खड़ी है और टोल-टैक्स 100-200-300 किलोमीटर दूर अपने आप कटता जा रहा है। ऐसा एक उदाहरण यजुर कुमार ने अपनी क्विड कार एचआर-51-बीएन-3134 के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि 5 जनवरी को उनके 65/-रुपये एनएच-8 पर मनोहरपुरा टोल बैरियर पर प्रातः 9.07 पर, 135/-रुपये शाहजहांपुर टोल बैरियर पर प्रातः 10.07 पर, 65/-रुपये मानेसर पर 11.08 पर कट गये। ये सभी कटौतियां जयपुर से गुड़गांव आने के रास्ते पर हुई हैं जबकि उनकी गाड़ी घर पर ही खड़ी है।

इसके बाद 18 जनवरी को फ़िर यही सिलसिला शुरू होता है जब 55/-रुपये कटते हैं गग्गल टोल (अजमेर-जयपुर) पर दोपहर 2.39 बजे, उसी दिन फ़िर 40/रुपये कटते हैं किशनगढ बैरियर पर 2.10 पर। इसी तरह 19 जनवरी को 12.48 पर कट गये 25/-रुपये गग्गल टोल बूथ पर।

एनएचएआई (राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) एवं पीटीएम द्वारा की जा रही इस सांझी लूट के बाबत हर कटौती के बाद सम्बन्धित अधिकारियों को ई मेल भेजे गये लेकिन कोई जवाब नहीं। वास्तव में यदि सरकार और कानून नाम की कोई चीज़ इस देश में होती तो इन लुटेरों के विरुद्ध आपराधिक मुकदमे दर्ज हो जाने चाहिये थे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06